बिहार सरकार

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग
पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार
ऑफ पोलो रोड, पटना–800 001
दूरभाष: 0612–2950 872
www.state.bihar.gov.in/ahd

बिहार सरकार
पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालन निदेशालय

समेकित बकरी एवं भेड़ विकास योजना

पशुपालन निदेशालय, बिहार द्वारा प्रकाशित

समेकित बकरी एवं भेड़ विकास योजना

बिहार में बकरे का माँस सर्वाधिक प्रिय है और आहार हेतु उपलब्ध माँस का मुख्य श्रोत है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई.सी.एम.आर.) की अनुशंसा के आलोक में बिहार में प्रति व्यक्ति माँस की उपलब्धता एक चौथाई है। भारत में 20वी. पशुगणना 2019 के अनुसार बकरियों की कुल संख्या 14 करोड़ 88 लाख 80 हजार है जो कुल पशुधन संख्या का 27.08 प्रतिशत है। बिहार में 20वी. पशुगणना 2019 के अनुसार बकरियों की संख्या 1 करोड़ 28 लाख 20 हजार है जो राष्ट्रीय संख्या का 11.61 प्रतिशत है। बकरी के माँस की मांग में दिन प्रतिदिन बढ़ोतरी हो रही है। DAHD, 2019 के अनुसार भारत में 942.91 हजार मिट्रिक टन बकरी के माँस का उत्पादन हो रहा है जो विश्व का 16.77 प्रतिशत है। जबकि बिहार में 29,918 मिट्रिक टन बकरी के माँस का उत्पादन हो रहा है। National Institute of Nutrition के अनुसार भारत में प्रति वर्ष बकरी के माँस की जरूरत 11.0 कि. ग्रा. है। 20वी. पशुगणना 2019 के अनुसार बकरियों की संख्या के अनुसार बिहार चौथे स्थान पर है। परन्तु उन्नत नस्ल की बकरियों की संख्या कम है, परिणामतः कम उत्पादन एवं कम आय प्राप्त होती है। साथ ही बिहार में बकरीपालन के अलावा भेड़ पालन भी एक पारम्परिक व्यवसाय है। ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे किसानों एवं पशुपालकों द्वारा परम्परागत तरीके से भेड़पालन किया जाता है। भेड़पालन के माध्यम से माँस एवं ऊन का उत्पादन किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे किसानों एवं पशुपालकों के लिए भेड़ पालन के माध्यम से उनकी आय एवं उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है। भेड़ पालन के माध्यम से पशु जन्य प्रोटीन की उपलब्धता सुनिश्चित होती है तथा रोजगार का सृजन होता है।

बकरी की नस्ल

फार्म के लिए वैसी बकरियों का चुनाव करना चाहिए, जिनका कम समय में ही बेचने लायक पूर्ण विकास हो जाये। माँस उत्पादन हेतु ऐसी बकरियाँ पालें जो जल्दी और अधिक बच्चा देती हो, मृत्यु दर कम हो, माँस स्वादिष्ट हो तथा पालन–पोषण आसान एवं लाभकारी हो। ब्लैक बंगाल नस्ल की बकरी में यह सभी गुण पाये जाने के कारण यह बिहार में सबसे ज्यादा पाली जाने वाली नस्ल है। राज्य में पशु प्रजनन हेतु बकरी प्रजातियों के ब्लैक बंगाल, जमुनापारी, बारबरी, बीटल एवं जखराना चयनित है।

ब्लैक बंगाल

ब्लैक बंगाल बकरा

ब्लैक बंगाल बकरी

यह काली, सफेद या बादामी रंगों की होती है। इसके पैर छोटे, कान नुकीले तथा कमर सीधी होती है। इसके वयस्क नर का वजन 18 से 20 किलोग्राम तथा मादा का वजन 15 से 18 किलोग्राम होता है। ये बकरियाँ 8 से 10 महीने में वयस्क हो जाती है तथा औसतन 15 महीने में प्रथम बार बच्चे को जन्म देने लायक हो जाती है। इनकी प्रजनन क्षमता माँस तथा चमड़े की गुणवत्ता अन्य नस्लों की तुलना में बहुत अधिक है। अधिक बच्चों को जन्म देना इनकी विशेषता है। औसतन यह दो वर्ष में तीन बार बच्चा देती है एवं एक बियान में 3 से 4 बच्चे देती है। कुछ बकरियाँ एक वर्ष में दो बार और एक बार में 4–4 बच्चे देती है। इस नस्ल के बकरियों से उत्तम किस्म का मुलायम और स्वादिष्ट माँस प्राप्त होता है। इनका नाक छोटा, परन्तु उभरा और कान लम्बा होता है। ये बंगाल, आसाम, उड़ीसा तथा बिहार में बहुतायत संख्या में मिल जाती है। बिहार की जलवायु इस नस्ल की बकरियों के लिए अनुकूल पाया गया है।

बिहार सरकार के पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग (पशुपालन निदेशालय) राज्य योजनान्तर्गत "समेकित बकरी एवं भेड़ विकास योजना" निम्न योजना संचालित कर रहा है:

(1.) निजी क्षेत्र में Goat Farm (10 बकरी+1 बकरा, 20 बकरी+1 बकरा, 40 बकरी +2 बकरा एवं 100 बकरी+5 बकरा की क्षमता) की योजना :

राज्य में उन्नत नस्ल के बकरा/बकरी की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु निजी क्षेत्रों में गोट फॉर्म (10 बकरी+1 बकरा, 20 बकरी+1 बकरा, 40 बकरी+2 बकरा एवं 100 बकरी+5 बकरा की क्षमता) की स्थापना पर अनुदान एवं प्रशिक्षण देकर बकरी/बकरा पालन को प्रोत्साहित करने की योजना है।

(2.) चयनित लाभुकों के बीच उन्नत नस्ल की तीन प्रजनन योग्य (एक इकाई) बकरी का नि:शुल्क वितरण (जीविका द्वारा) की योजना :

बकरी विकास के लिये राज्य में उन्नत नस्ल के तीन प्रजनन योग्य (एक इकाई) बकरी, इच्छुक बकरीपालकों/गरीब परिवारों के बीच जीविका के माध्यम से नि:शुल्क वितरण की योजना संचालित है।

(3.) भेड़ विकास योजना के तहत 20 मादा भेड़ (Ewe) + 1 नर भेड़ (Ram) के एक इकाई तथा 40 मादा भेड़ (Ewe) + 2 नर भेड़ (Ram) क्षमता के भेड़ फार्म (Sheep Farm) की स्थापना की योजना:

राज्य के परम्परागत भेड़पालकों हेतु भेड़पालन के लिए 20 मादा भेड़ (Ewe) + 1 नर भेड़ (Ram) के एक इकाई के क्रय तथा 40 मादा भेड़ (Ewe) + 2 नर भेड़ (Ram) क्षमता के भेड़ फार्म की स्थापना पर अनुदान एवं प्रशिक्षण देकर भेड़पालन को प्रोत्साहित करने की योजना है।

(1.) निजी क्षेत्र में Goat Farm की योजना:

उद्देश्य: इस योजना का मुख्य उद्देश्य राज्य में कम उत्पादकता वाली स्थानीय नस्ल की बकरियों को उच्च उत्पादकता वाली नस्ल से प्रतिस्थापित किया जाना है। साथ ही बकरी पालन को बढ़ावा देने एवं उन्नत नस्ल के बकरा/बकरी की उपलब्धता सुनिश्चित किया जाना है। बकरी/बकरा पशुजन्य प्रोटीन का एक मुख्य स्रोत है। बकरी/बकरा उत्पादन से पशुजन्य प्रोटीन की उपलब्धता सुनिश्चित होती है तथा बड़े पैमाने पर रोजगार का सृजन होता है। साथ ही बकरीपालकों की आय में वृद्धि होती है तथा राज्य में खाद्य पदार्थों एवं प्रोटीन की उपलब्धता में भी वृद्धि होती है।

लाभुकों की चयन प्रकिया :

इस योजना के तहत लाभुकों का चयन करने हेतु समाचार पत्रों में विज्ञापन का प्रकाशन कर इच्छुक बकरीपालकों/गरीब परिवारों से आवेदन आमंत्रित किया जाता है। योजना के प्रचार–प्रसार कर ऑन–लाईन आवेदन प्राप्त किया जाता है तथा योजना का कार्यान्वयन राज्य के सभी जिलों में किया जाता है।

(i) ऑन – लाईन आवेदन के लिये विभागीय वेबसाईट https://state.bihar.gov.in/ahd/CitizenHome.html पर दिये गये लिन्क (link) पर जाकर आधार संख्या/वोटर कार्ड संख्या से पंजीकरण (Registration) करना होता है। ऑनलाईन आवेदन–पत्र भरते समय सभी वांछित कागजातों/अनुलग्नकों को ऑनलाईन (Online) अपलोड (upload) करना होता है।

(ii) इस योजना अर्न्तगत बकरी फार्म हेतु वांछित भूमि (आधारभूत संरचना निर्माण एवं हरा चारा उगाने हेतु भूमि) की आवश्यकता निम्नवत है :

क्रं.	बकरी फार्म की क्षमता	भूमि की आवश्यकता	बकरी फार्म संरचना निर्माण हेतु भूमि	बकरी फार्म के साथ खुला जगह
1	10 बकरी + 1 बकरा	900 वर्गफीट	300 वर्गफीट	600 वर्गफीट
2	20 बकरी + 1 बकरा	1800 वर्गफीट	600 वर्गफीट	1200 वर्गफीट
3	40 बकरी + 2 बकरा	3600 वर्गफीट	1200 वर्गफीट	2400 वर्गफीट
4	100 बकरी + 5 बकरा	9000 वर्गफीट	3000 वर्गफीट	6000 वर्गफीट

पशुओं के विकास तथा उनसे अधिकतम उत्पादन के लिए स्वच्छ एवं आरामदेह आवास का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। बकरी फार्म का निर्माण हेतु कुछ महत्वपुर्ण ध्यान देने योग्य बातें जैसे – जगह का चुनाव, आवास की लम्बाई एवं चौड़ाई, दिशा का चयन, छत का प्रकार एवं ऊँचाई, सतह, इत्यादि जो निम्न प्रकार से होना चाहिए:

- 10 बकरी + 1 बकरा क्षमता बकरी फार्म के लिए

बकरी फार्म का निर्माण जलजमाव से दूर, ऊँची जगह पर होना

चाहिए। प्रति वयस्क बकरी के लिए 12 वर्ग फीट स्थान की जरूरत होती है। प्रति वयस्क बकरा के लिए 15 वर्ग फीट एवं बकरी के बच्चे के लिए 15 वर्ग फीट स्थान जरूरी है। 10 बकरी एवं 1 बकरा के लिए 30 फीट x 10 फीट का फार्म बनाया जाना है साथ ही इससे दुगुनी जगह बकरियों के स्वेच्छानुसार घूम–घूमकर बाहर व भीतर आने–जाने के लिए है। बकरी फार्म की फर्श बलुआही मिट्टी की सर्वोत्तम मानी जाती है। एस्बेस्ट्स या टिन शीट की छत झोपड़ीनुमा हो तथा दो फीट बाहर निकली रहे। इससे धूप कम लगती है तथा बरसात में अन्दर पानी की छीटें कम पड़ती हैं। एस्बेस्ट्स या टिन शीट को फिट करने हेतु बाँस या लकड़ी के बल्ले का इस्तेमाल किया जाना है। बकरी शेड के पीछे की ऊँचाई 10–12 फीट तथा आगे की ओर 6–8 फीट ऊँची होनी चाहिए। बकरी फार्म का लम्बा सिरा पूरब–पश्चिम हो, जमीन से दीवार की ऊँचाई 2–3 फीट रखे उसके ऊपर बाँस का जाली लगाये। बीच–बीच में पीलर के रूप में कंक्रीट या लकड़ी या बाँस के खम्भे का उपयोग किया जा सकता है। अन्दर की जमीन की सतह बाहर की जमीन से एक फीट ऊँची हो, फर्श बाहर के तरफ ढ़ालूनुमा रखें ताकि बाहर का पानी अन्दर नहीं आ सके। 10 बकरी एवं 1 बकरा के लिए शेड का निर्माण (लम्बाई x चौड़ाई) जमीन के उपलब्धता पर निर्भर कर सकता है।

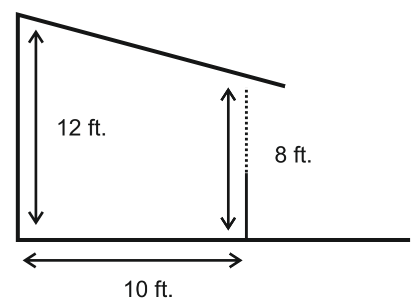

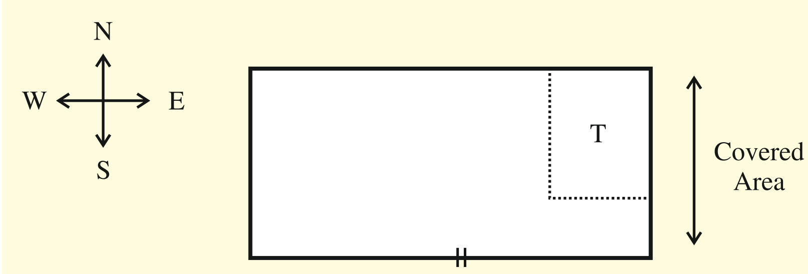

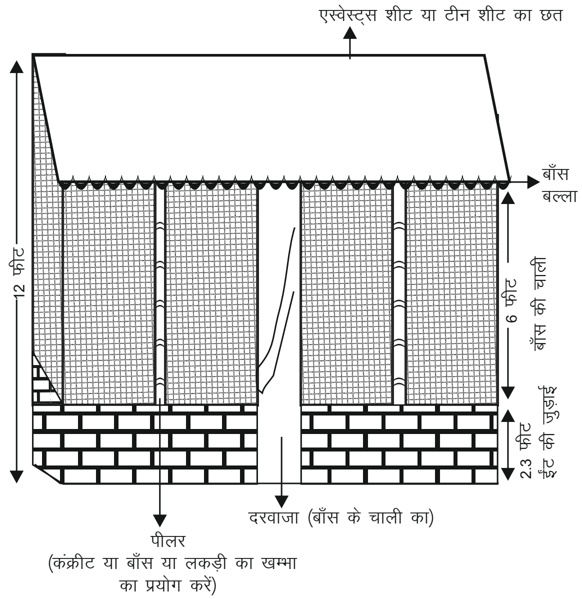

10 बकरी + 1बकरा का बकरी फार्म शेड

- **20 बकरी + 1 बकरा क्षमता बकरी फार्म के लिए**

बकरी फार्म का निर्माण जलजमाव से दूर, ऊँची जगह पर होना चाहिए। प्रति वयस्क बकरी के लिए 12 वर्ग फीट स्थान की जरूरत होती है। प्रति वयस्क बकरा के लिए 15 वर्ग फीट एवं बकरी के बच्चे के लिए 8 वर्ग फीट स्थान जरूरी है। 20 बकरी एवं 1 बकरा के लिए 30 फीट x 20 फीट का फार्म बनाया जाना है। साथ ही इससे दुगुनी जगह बकरियों के स्वेच्छानुसार घूम–घूमकर बाहर व भीतर आने–जाने के लिए है। बकरी फार्म की फर्श पर ईंट का सोलिंग होनी चाहिए। बकरी शेड की छत एस्बेस्ट्स या सी.जी.आई. शीट या टिन/फाईबर शीट की होनी चाहिए। एस्बेस्ट्स या सी.जी.आई. शीट या टिन/फाईबर शीट की छत को फिट करने के हेतु लोहे का पाईप का इस्तेमाल किया जाना है। शेड के जाली के तरफ दोनों साईड तीन फीट छज्जा बाहर की ओर निकला होना चाहिए। बकरी शेड के बीच की ऊँचाई 12 फीट तथा दोनों साईड की ओर 8–9 फीट ऊँची होनी चाहिए।

बकरी फार्म का लम्बा सिरा पूरब–पश्चिम हो, जमीन से दीवार की ऊँचाई 4 फीट रखे उसके ऊपर लोहे का जाली लगाये। बीच–बीच में निश्चित दुरी पर पीलर के रूप में कंक्रीट या ईंट का उपयोग किया जाना है। शेड के चौड़ाई में दोनों तरफ की छत तक ईंट की दीवार होनी चाहिए। अन्दर की जमीन की सतह बाहर की जमीन से एक फीट ऊँची हो, फर्श बाहर के तरफ ढ़ालूनुमा रखें ताकि बाहर का पानी अन्दर नहीं आ सके।

- **40 बकरी + 2 बकरा क्षमता बकरी फार्म के लिए**

बकरी फार्म का निर्माण जलजमाव से दूर, ऊँची जगह पर होनी चाहिए। प्रति वयस्क बकरी के लिए 12 वर्ग फीट स्थान की जरूरत होती है। प्रति वयस्क बकरा के लिए 15 वर्ग फीट एवं बकरी के बच्चे के लिए 8 वर्ग फीट स्थान जरूरी है। 40 बकरी एवं 2 बकरा के लिए 60 फीट x 20 फीट का फार्म बनाया जाना है। साथ ही इससे दुगुनी जगह बकरियों के स्वेच्छानुसार घूम–घूमकर बाहर व भीतर आने–जाने के लिए है। बकरी फार्म की फर्श पर ईंट का सोलिंग होनी चाहिए।

बकरी शेड की छत एस्बेस्ट्स या सी.जी.आई. शीट या टिन/फाईबर शीट की छत होनी चाहिए। एस्बेस्ट्स या सी.जी.आई. शीट या टिन/फाईबर शीट की छत को फिट करने हेतु लोहे का पाईप का इस्तेमाल किया जाना है। शेड के जाली के तरफ दोनों साईड तीन फीट छज्जा बाहर की ओर निकला होना चाहिए। बकरी शेड के बीच की ऊँचाई 12 फीट तथा दोनों साईड की ओर 8–9 फीट ऊँची होनी चाहिए। बकरी फार्म का लम्बा सिरा पूरब–पश्चिम हो, जमीन से दीवार की ऊँचाई 4 फीट रखे उसके ऊपर मोटे लोहे का जाली लगाये। बीच–बीच में निश्चित दुरी पर पीलर के रूप में कंक्रीट या ईंट का उपयोग किया जाना है। शेड के चौड़ाई में दोनों तरफ की छत तक ईंट की दीवार होनी चाहिए। अन्दर की जमीन की सतह बाहर की जमीन से एक फीट ऊँची हो, फर्श बाहर के तरफ ढ़ालूनुमा रखें ताकि बाहर का पानी अन्दर नहीं आ सके।

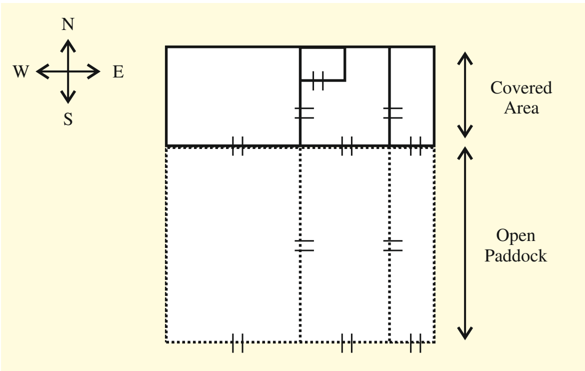

Side View

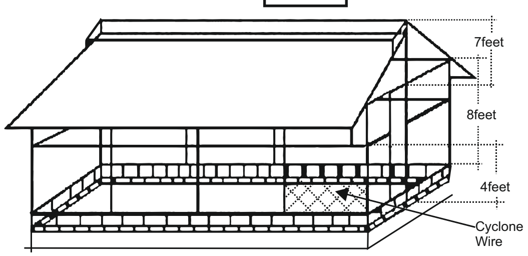

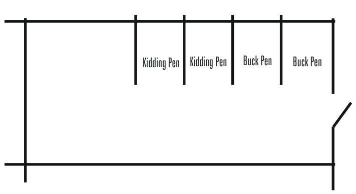

Floor Plan

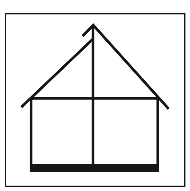

Front View

20 बकरी + 1 बकरा का बकरी फार्म शेड

40 बकरी + 2 बकरा का बकरी फार्म शेड

- ## 100 बकरी + 5 बकरा क्षमता बकरी फार्म के लिए

बकरी फार्म का निर्माण जलजमाव से दूर, ऊँची जगह पर होना चाहिए। प्रति वयस्क बकरी के लिए 12 वर्ग फीट स्थान की जरूरत होती है। प्रति वयस्क बकरा के लिए 15 वर्ग फीट एवं बकरी के बच्चे के लिए 8 वर्ग फीट स्थान जरूरी है। 100 बकरी एवं 5 बकरा के लिए 150 फीट x 20 फीट का फार्म बनाया जाना है। साथ ही इससे दुगुनी जगह बकरियों के स्वेच्छानुसार घूम–घूमकर बाहर व भीतर आने–जाने के लिए है। शेड की चौड़ाई 20 फीट से अधिक नहीं होनी चाहिए लम्बाई में कोई बंधेज नहीं है लाभुक के जमीन की उपलब्धता पर निर्भर करता अगर लाभुक के पास निर्धारित जमीन की लम्बाई कम है तो दो शेड का निर्माण भी किया जा सकता है परन्तु शेड की संरचना एक तरह का होना चाहिए एवं Proper Cross Ventilation होना चाहिए।

बकरी फार्म के शेड की लम्बाई में 30 फीट के अन्तराल पर विभाजित कर बकरियों के साईज, उम्र एवं लिंग के आधार पर एक ग्रुप में रखा जा सकता है। शेड के अन्दर विभाजन ईंट या बाँस या लोहे का पाईप इस्तेमाल किया जा सकता है। बकरी फार्म की फर्श पर ईंट का सोलिंग या कंक्रीट होना चाहिए।

बकरी शेड की छत एस्बेस्ट्स या सी.जी.आई. शीट या टिन/फाईबर शीट की होनी चाहिए। एस्बेस्ट्स या सी.जी.आई. शीट या टिन/फाईबर शीट की छत को फिट करने के हेतु लोहे का पाईप फ्रेम का इस्तेमाल किया जाना है। शेड के जाली के तरफ दोनों साईड तीन फीट छज्जा बाहर की ओर निकला होना चाहिए। बकरी शेड के बीच की ऊँचाई 12 फीट तथा दोनों साईड की ओर 8–9 फीट ऊँची होनी चाहिए। बकरी फार्म का लम्बा सिरा पूरब–पश्चिम हो, जमीन से दीवार की ऊँचाई 4 फीट रखे उसके ऊपर मोटे लोहे का जाली लगाये। बीच–बीच में निश्चित दुरी पर पीलर के रूप में कंक्रीट या ईंट का उपयोग किया जाना है। शेड के चौड़ाई में दोनों तरफ की छत तक ईंट की दीवार होनी चाहिए। अन्दर की जमीन की सतह बाहर की जमीन से एक फीट ऊँची हो, फर्श बाहर के तरफ ढ़ालूनुमा रखें ताकि बाहर का पानी अन्दर नहीं आ सके।

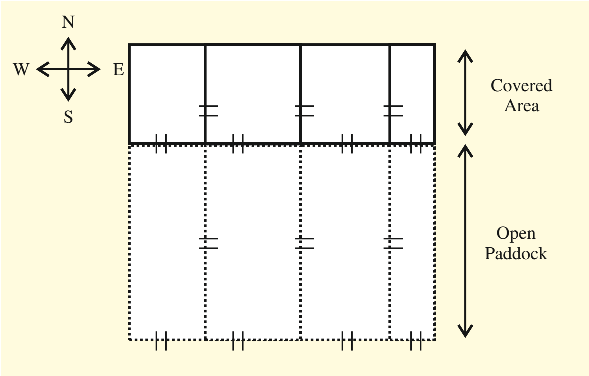

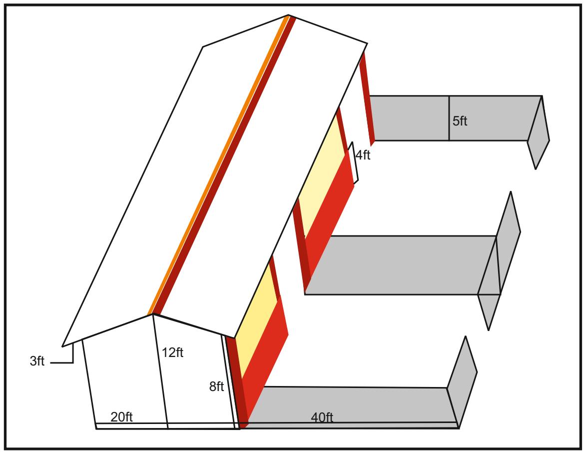

100 बकरी + 5 बकरा का बकरी फार्म शेड

तकनीकी जानकारी	
बकरी एवं बकरों की नस्ल	ब्लैक बंगाल
बकरियों + बकरों की संख्या	10+1, 20+1, 40+2 एवं 100+5
व्यस्क होने की उम्र	10–12 माह
बच्चा उत्पन्न होने का अन्तराल	6 माह
बच्चा उत्पन्न का प्रतिशत	85
बकरी में बच्चा जनने की क्षमता प्रति ब्रींडिंग	3.0 यानि एक बकरी एक साल में 6 बच्चे पैदा कर सकती है।
लिंगनुपात	1:1
बकरी के बच्चे की मृत्यु दर	15 प्रतिशत
बकरी फार्म के मापदंड	
प्रति बकरी को जगह चहिए	12 वर्ग फीट
प्रति बकरा को जगह चहिए	15 वर्ग फीट
प्रति बच्चे को जगह चहिए	8 वर्ग फीट
बकरी शेड निर्माण का खर्च (10+1) के लिए	100 रूपये प्रति वर्ग फीट
बकरी शेड निर्माण का खर्च (20+1, 40+2 एवं 100+5) के लिए	200 रूपये प्रति वर्ग फीट
व्यस्क मादा की कीमत	4,000 रूपये
व्यस्क नर की कीमत	5,000 रूपये
बकरियों का बीमा (प्रजनन योग्य बकरी एवं बकरा की कुल कीमत का)	5 प्रतिशत
बकरियों एवं बकरों के खाने का खर्च	दाना– 300 ग्रा./दिन/बकरी या बकरा/20 रूपये/कि.ग्रा.
दवा का खर्च	150 रूपये/ बकरी या बकरा
खाने के उपकरण एवं रस्सी आदि पर खर्च	250 रूपये/ बकरी या बकरा

अनवर्ती व्यय				
व्यय मानक	10 बकरी + 1 बकरा के लिये (खर्च हजार में)	20 बकरी + 1 बकरा के लिये	40 बकरी + 2 बकरा के लिये	100 बकरी + 5 बकरा के लिये
बकरी शेड निर्माण का खर्च	30,000	1,15,000	2,30,000	5,75,000
प्रजनन योग्य बकरियों एवं बकरों के खरीद पर खर्च	45,000	85,000	1,70,000	4,25,000
आवर्ती व्यय (कार्यशील पुँजी)				
बकरियों एवं बकरों के खाने का खर्च	18,075	46,000	69,000	1,72,500
बकरियों एवं बकरों का बीमा पर खर्च	2,250	4,250	8,500	21,250
दवा पर खर्च	1,650	3,150	6,300	15,750
खाने के उपकरण एवं रस्सी आदि पर खर्च	2,750	5,250	10,500	26,250

क्र.	लाभुक की कोटि	फार्म की क्षमता	परियोजना लागत	अनुदान की दर	अनुदान की राशि का भुगतान		
					प्रथम किस्त	द्वितीय किस्त	कुल
					40 प्रतिशत	60 प्रतिशत	
1	अनु. जाति	10+1	0.75 लाख	लागत का 60 प्रतिशत	18,000	27,000	45,000
2	अनु.ज. जाति		0.75 लाख	लागत का 60 प्रतिशत	18,000	27,000	45,000
3	सामान्य	20+1	2.00 लाख	लागत का 50 प्रतिशत	40,000	60,000	1,00,000
4	अनु. जाति		2.00 लाख	लागत का 60 प्रतिशत	48,000	72,000	1,20,000
5	अनु. ज. जाति		2.00 लाख	लागत का 60 प्रतिशत	48,000	72,000	1,20,000
6	सामान्य	40+2	4.00 लाख	लागत का 50 प्रतिशत	80,000	1,20,000	2,00,000
7	अनु. जाति		4.00 लाख	लागत का 60 प्रतिशत	96,000	1,44,000	2,40,000
8	अनु. ज. जाति		4.00 लाख	लागत का 60 प्रतिशत	96,000	1,44,000	2,40,000
9	सामान्य	100+5	10.00 लाख	लागत का 50 प्रतिशत	2,00,000	3,00,000	5,00,000
10	अनु. जाति		10.00 लाख	लागत का 60 प्रतिशत	2,40,000	3,60,000	6,00,000
11	अनु. ज. जाति		10.00 लाख	लागत का 60 प्रतिशत	2,40,000	3,60,000	6,00,000

- ## आहार व्यवस्था

चराकर और खूँटे पर खिलाकर पालना : इस विधि में बकरियों को 7 से 8 घंटे चरने दिया जाता है। इसके बाद बकरी घर में लाकर हरा–चारा, पत्तियाँ और दाना मिश्रण भी खिलाया जाता है। यह बकरी पालन की सबसे उत्तम विधि है। इसमें बकरियों के वजन में काफी वृद्धि होती है और स्वास्थ्य सही रहता है। इसलिए व्यवसाय में अधिक आमदनी और उचित बाजार मूल्य के लिए यही विधि अपनायें। अधिक मुनाफे के लिए बकरियों के आहार का उचित प्रबंधन आवश्यक है। बकरी को मुख्य रूप से तीन प्रकार का चारा दिया जाता है– दाना मिश्रण, सूखा चारा और हरा चारा।

दाना–चारा	मेमने (3–12 माह)	व्यस्क बकरा/बकरी	ग्याभिन बकरी	प्रजनन के बाद से (प्रजनन के मय)
दाना मिश्रण	100–300 ग्राम	200–250 ग्राम	400–500 ग्राम	400 ग्राम
सूखा चारा	100–400 ग्राम	300–600 ग्राम	300–600 ग्राम	300–600 ग्राम
हरा चारा	500 ग्राम–1 कि.ग्रा.	1 कि.ग्रा.–2.5 कि.ग्रा.	1 कि.ग्रा.–3 कि.ग्रा.	1 कि.ग्रा.–3 कि.ग्रा.

अर्ध सघन पद्धति में बकरियों को 5–6 घंटे चराई करायें। दाना–मिश्रण बनाने के लिए खल्ली (सरसों, तीसी, मूँगफली) 20 प्रतिशत, मक्का/गेहूँ 60 प्रतिशत, गेहूँ का चोकर 17 प्रतिशत, खनिज मिश्रण 1.5 प्रतिशत एवं नमक 1.5 प्रतिशत मिलाना चाहिए। बकरी के आहार में अचानक कोई परिवर्तन न करें। बकरी को फार्म में हरा चारा, भूसा एवं दाना उपयुक्त बर्तन में देना चाहिए इससे आहार का नुकसान नहीं होता एवं चारा भी संक्रमित नहीं होता है।

- ## स्वास्थ्य व्यवस्था

स्वास्थ्य प्रबन्धन में थोड़ी सी लापरवाही बच्चों का बढ़ोतरी दर एवं बकरियों के उत्पादन को प्रभावित कर सकती है। विभाग द्वारा बकरियों को संक्रामक एवं अन्य रोगों से बचाव के लिए कार्यक्रम प्रत्येक साल निर्धारित हैं। जिसके उपयोग से बकरी फार्म में मृत्युदर को न्यूनतम रखा जा सकता है।

टीकाकरण कार्यक्रम

बीमारी	प्रारम्भिक टीकाकरण		पुनः टीकाकरण
	प्रथम टीका	बूस्टर टीका	
बकरी प्लेग(पी.पी.आर.)	3 महीने की उम्र	आवश्यक नहीं	3 वर्ष के पश्चात्
खुरपका एवं मुँहपका रोग(एफ.एम.डी.)	3–4 महीने की उम्र	आवश्यक नहीं	6 माह
गलाघोंटू एवं जहरवाद (एच.एस. एवं बी.क्यू.)	3 महीने की उम्र	आवश्यक नहीं	6 माह/प्रतिवर्ष

कृमि नाशन

कृमि रोग	उम्र	सेवन कराने की अवधि	ध्यान देने हेतु विशेष बातें
कॉक्सोडियोसिस	2–3 माह पर	3–5 दिन तक	6 माह की उम्र तक कॉक्सीकारक दवा निर्धारित मात्रा में देनी चाहिये
अन्तः परजीवी (डिवार्मिंग)	3 माह की उम्र	बरसात के प्रारम्भ मेंतथा अन्त में	सभी पशुओं को एक साथ दवा देनी चाहिये
बाह्य परजीवी (डिपिंग)	सभी उम्र में	सर्दियों के प्रारम्भ मेंतथा अन्त में	सभी पशुओं को एक साथ नहलाना चाहिये

पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाव हेतु टीकाकरण

क्र.	रोग का नाम	टीका लगाने का समय
1	**गलाघोंटू (एच.एस.)**	6 माह एवं उसके उपर की उम्र में पहला टीका। उसके बाद वर्ष में एक बार बराबर अन्तराल पर वर्षा ऋतु आरंभ होने से पहले।
2	**कृष्णजंघा (ब्लैक क्वार्टर)**	6 माह एवं उससे उपर की उम्र में पहला टीका। उसके बाद वर्ष में एक बार बराबर अन्तराल पर।
3	**एन्थैक्स**	4 माह एवं उसके उपर की उम्र में पहला टीका। उसके बाद वर्ष में एक बार बराबर अन्तराल पर (एन्डेमिक क्षेत्रों में)।
4	**खुरहा–मुँहपका (एफ.एम.डी.)**	4 माह एवं उसके उपर की उम्र में पहला टीका। बुस्टर पहला टीका के एक माह के बाद एवं तत्पश्चात् वर्ष में दो बार छः माह के अन्तराल पर।
5	**पी.पी.आर.**	4 माह की आयु एवं उसके उपर के सभी मेमनों, बकरियों एवं भेड़ों में। एक बार टीका लगाने के बाद तीन वर्ष तक पशु इस बीमारी से सुरक्षित रहते हैं।